

STOP WISHING

Start Doing



॥ वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥

॥ पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सदुरुभ्यो नमः॥

प्रेरणा : पूज्य मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनिराज श्री शंत्रुजय विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक : नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook

शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट

C/O विपुलभाई झवेरी

VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time : 2pm to 7pm)
Mobile – 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : ☎ 81810 36036 ✉ contact@faithbook.in

ज्ञान हमें सुधारने का काम कर रहे हैं!

सादर प्रणाम,

परमोपकारी जिनशासन में गुरुभगवंतो ने हमेशा ही शिष्यों को चार महत्वपूर्ण तरीके से सुधारने का काम किया है। करने लायक कार्य को याद कराना, ना करने लायक कार्य नहीं करने के लिए समझाना, बहुत समझाने के बाद भी करने योग्य काम ना करे व ना करने योग्य काम करे तो थोड़ी उग्रता से कहना और उसके बाद भी ना मानने पर आंखें लाल करके भी समझ देना!!

Faithbook के माध्यम से महात्माओं द्वारा लिखित लेख/संदेश भी हमारे लिए सारणा, वारणा, चोयणा और पडिचोयणा यह चार तरीके से सुधारने का काम ही कर रहे हैं!! पाठकों ने ना सिर्फ उन लेखों का पठन किया बल्कि उसकी परीक्षा भी देकर पुण्योपार्जन किया इसलिए सबका आभार और अनुमोदना!!

- नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

INDEX

आहार से संस्कार 01

पू. ग. आ. श्री राजेंद्र सूरीश्वरजी म.सा.

देवद्रव्य राशि का
उपयोग साधर्मिक के
उत्थान में...? 05

पू. आ. श्री अभयशेखर सूरीजी म.सा.

अस्तित्व अपरिवर्तित
होता है। 09

पू. पं. श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म. सा.

Everything is Online,
We are Offline 10.0 11

पू. म. श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

संघ संवेदना संकल्प 15
प्रियम्

गोडीजी का इतिहास - 4 19

पू. म. श्री धनंजय विजयजी म.सा.

“जिन” को
“निज” में समाना है। 22

पू. म. श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

Secret of Happiness 24

पू. म. श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.



FaithbookOnline

You can Read our Faithbook Knowledge
Book in English & Hindi on our website's
blog Visit : www.faithbook.in

आहार से संस्कार

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री राजेंद्र सूरेश्वरजी म.सा.

शिक्षण और संस्कार

शुद्ध जीवन व्यवहार की दृष्टि से संस्कार की बहुत ही आवश्यकता है। “क्यों आया?” “कैसे आया?” “किस लिए पधारें?” इन तीनों वाक्यों में कितना अंतर है? अर्थ एक ही है, परन्तु वाणी में भिन्नता है। संस्कारयुक्त वाणी मनुष्य की कीर्ति में अभिवृद्धि करती है। किसी व्यक्ति ने सुन्दर आभूषण धारण किए हों, सुन्दर वस्त्र पहने हों, किन्तु वाणी अच्छी न हो तो ऐसा प्रतीत होगा, मानो हंस के वेश में कौआ है। संस्कारी बनने का प्रथम सोपान है शुद्ध आहार, विहार, मन और भाषा की श्रेष्ठता। भाषा और विचारों से मनुष्य का मूल्यांकन संभव है।

राजा, मंत्री और दरबान तीनों एक साथ घूमने निकले। रास्ते में तीनों मार्ग भूल गए और एक-

दूसरे से अलग-अलग हो गए। उन्होंने रास्ते में एक अंधे साधु को बैठे देखा। पहले ने पूछा “प्रज्ञाचक्षु! क्या आपने यहाँ से किसी को जाते हुए देखा?” उत्तर मिला “नहीं भाई! मैं अंधा हूँ।” पूछने वाले ने कहा “माफ करना, मुझसे भूल हो गई।”

पूछने वाला आगे चला गया। थोड़ी देर बाद दूसरा आया, और उसने पूछा “हे सूरदास! यहाँ से किसी को जाते हुए देखा?” उत्तर मिला “हाँ भाई! राजा आगे गए हैं।” उसके जाने के कुछ देर बाद तीसरे ने आकर पूछा “अबे अंधे! यहाँ से कोई निकला है?” साधु ने जवाब दिया “हाँ, पहले राजा जी गए, फिर मंत्री गए और अब तू दरबान है, उनके पीछे जा।”

आगे जाकर वे तीनों मिले। बातचीत हुई, तीनों को आश्चर्य हुआ कि अंधे साधु ने उन्हें पहचान कैसे



लिया? वे तीनों वापस साधु के पास आए। साधु ने उनकी शंका का समाधान किया, “हे प्रजाचक्षु! वाले संबोधन में विनय-विवेक है, अर्थात् यह बोलने वाला उच्चकुल का संस्कारी व्यक्ति होना चाहिए, इसलिए मैंने उन्हें राजा माना। हे सूरदास! संबोधन में पहले की अपेक्षा मान की थोड़ी कमी थी, किन्तु उद्वण्डता का अभाव था, इसलिए मैंने उसे मंत्री समझा। जबकि तीसरे संबोधन ‘अबे अंधे’ में तिरस्कार के भाव थे, इसलिए मैंने उसे दरबान समझा।”

वाणी को संस्कारी बनाने के लिए विचारों को संस्कारी बनाना चाहिए। विचारों को संस्कारी बनाने हेतु आहार शुद्धि जरूरी है। कॉन्वेन्ट में अंग्रेजी मीडियम में पढ़ने वाले बालकों में उच्च संस्कारों का खात्मा हो रहा है। बालक अल्प समय में स्वच्छंदी और पाश्चात्य अनार्य संस्कार से प्रभावित हो जाते हैं। अधिकतर बालक माता-पिता का कहना नहीं मानते, यह एक हकीकत है। हमारी मातृभाषा से अज्ञात होने के कारण हमारे महापुरुषों द्वारा बताई गई सुन्दर बातें, आदर्श चरित्र, सत्साहित्य और सत्संग से वे वंचित रहते हैं। बच्चों को सर्वप्रथम अपनी मातृभाषा और संस्कारमय शिक्षण की आवश्यकता है। इससे बच्चे विनयी बनेंगे, और संस्कार संपन्न बनकर अपना भविष्य उज्ज्वल बनाएँगे।



आरोग्य और आहार

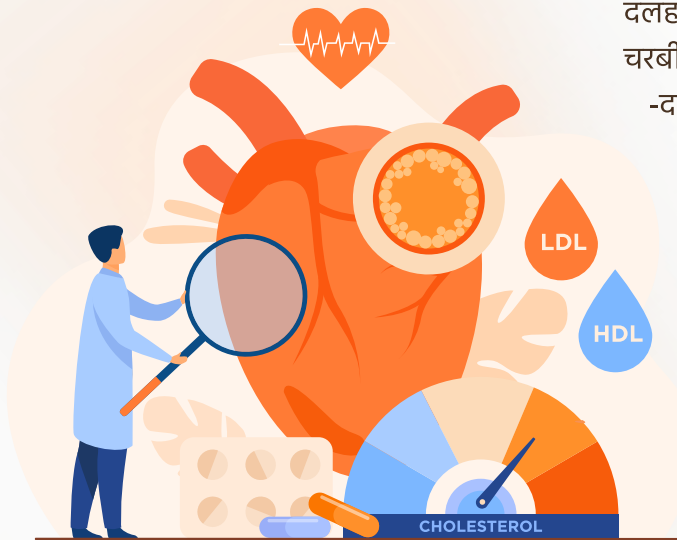
अंग्रेजों ने पिछले कुछ वर्षों में ‘ब्रिटेन के नागरिकों ने कैसा आहार लेना चाहिए?’ यह निश्चित किया है। अंग्रेज जिस आहार का सेवन करते हैं, उनमें से सत्तर प्रतिशत टिन पैक और कारखाने में बने हुए आहार लेते हैं। जिसके कारण प्रतिवर्ष डेढ़ लाख से अधिक लोग हृदयरोग से मृत्यु पाते हैं। ताजा आहार ही आरोग्य प्रदान करता है। जबकि बासी भोजन रोग को निमंत्रित करता है। आजकल चिकित्सकों का कहना है कि पैंतीस प्रतिशत केन्सर का रोग खराब आहार-विहार से होता है। विश्व में फूड-पोइज़न से होने वाली मृत्यु का प्रमाण दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। न्यू स्टेट्मेन्ट्स नामक अंग्रेजी साप्ताहिक ने निष्कर्ष निकाला है कि ‘चरबी, शक्कर और नमक का आहार बढ़ाने से एलर्जी बढ़ती है।’

तन्दुरुस्ती के लिए गाय का दूध श्रेष्ठ होता है। क्योंकि जो शक्ति साँड में है, वह पाडे में नहीं है। भारतवासी भूल रहे हैं कि गाय के दूध में कोलेस्ट्रॉल कम और विटामीन अधिक है। गाय का दूध आँखों का तेज बढ़ाता है।

धनवान लोगों को प्रोसेस्ड आहार खाते देख, मध्यमवर्गी लोग भी ताकत बिना का और महंगा आहार खाने लगे हैं। मैदे वाले और भारी खुराक खाने से बीमार रोगी जो दवाई खाते हैं, वह ज्यादा हानिप्रद है। ब्लडप्रेसर कम करने वाली सेलाक्रिन की दवाई लेने से लीवर बिगड़ता है। दर्द को मिटाने वाली दवाई लीवर और किडनी खराब करती है।

अल्सर और एसीडिटी खट्टे, तीखे, तले हुए पदार्थ खाने से होती है। अल्सर के लिए सिमेटिडीन लेना पड़ती है, जिससे मनुष्य का पुरुषत्व घटता है।

केले के आसेवन से पेट में म्युकोस सेल्स अर्थात् कोमल त्वचा की वृद्धि होती है, जिससे पेट के अल्सर को रक्षण मिलता है। लंदन से प्रकाशित 'गार्डिजन' नामक साप्ताहिक की रिपोर्ट :



'बाल्टिमोर यूनिवर्सिटी के अपराध विज्ञान के प्रोफेसर डियाना फिशबी ने फ्लोरिडा की जेल के कैदियों पर प्रयोग किया। जिसमें कुछ कैदियों के समूह को रीफाइन किया खाद्यन्न और मैदे व शक्कर की वस्तुएँ भोजन में देनी बंद कर दी, परिणामतः वे अनुशासित और शान्त बनते गए। कुछ समय बाद पुनः उन्हें मैदा, शक्कर और तला हुआ भोजन देना प्रारंभ किया, तो उनके आचरण में विकृति आने लगी। इसी प्रकार कुछ मस्तीखोर बालकों के भोजन में रीफाइन्ड शक्कर, सोफ्ट ड्रिंक आदि बन्द कर, उन्हें ताजे फलों का रस देना शुरू किया, परिणामतः उनकी शरारतें कम हो गई।'

आहार और आरोग्य के विषय अधिकांश लोगों को नहींवत् ज्ञात है। आरोग्य को स्वस्थ रखने हेतु आहार विज्ञान का अभ्यास होना जरूरी है। इंग्लैंड के डॉक्टर सर रिचार्ड डॉल का कथन हर कोई

आरोग्यशास्त्री स्वीकार करते हैं: 'तुम्हें केन्सर, हृदयरोग, हाइपर-टेशन, डायबीटीज, अल्सर और पेट के रोगों से बचना हो तो ज्यादा कैलोरी देने वाले साबुत धान्य, हाथ का पिसा हुआ आटा, दलहन, हरी सब्जी और फल का खुराक पर्याप्त है। चरबी, अंडे, मांस, मछली और मीठे पदार्थ नुकसान -दायी होने से उनका त्याग करना चाहिए।

पाँच हजार से अधिक वर्ष पूर्व मानव ने सर्वप्रथम अपने भोजन में नमक का समावेश किया। उसके पश्चात् भोजन में स्वाद के लिए कुछ-न-कुछ बढ़ाते गए। दाल, पीड़ा आदि में 'मोनो सोडियम ग्लु-कोनेट' मिलाने से स्वाद बढ़ता है। चाइनीज़ सामग्रियों में 'आजिनो-मोटो' मिलाया जाता है। इनके सेवन से केन्सर हो सकता है। यह स्वाद रसिकों के लिए बड़ी चेतावनी है।

तेल और घी में बनी वेफर, बिस्किट आदि ज्यादा समय पैकेट में रहने के कारण बिगड़ जाती है। इन्हें सुरक्षित रखने हेतु उसमें 'एन्टीओक्सिडन्ट' आदि का मिश्रण करते हैं। आलू की वेफर और नमकीन बिस्किट में हाइड्रोएक्सिटोल्थून रहता है, जिससे चर्मरोग तथा बच्चों के मस्तिष्क कमजोर होते हैं। बच्चे 'हाईपर एक्टिव' बनते हैं।

ताजे फल और शाकभाजी ही गुणकारी है। परन्तु अब बासी फल या डिब्बे में रखे फलों को सुन्दर रखने के लिए उनमें रासायनिक दवाइयाँ मिलाई जाती है। दूध का पावडर सफेद दिखाने के लिङ उसमें कृत्रिम रंग मिलाये जाते हैं। कन्डेन्सड मिलक के डिब्बे में और इन्सटन्ट कॉफी में भी कृत्रिम रंगों की मिलावट की जाती है। ये रंग कोल-तार आदि में से बनते हैं। खाद्य पदार्थों में टार ट्रांज़िन नामक कृत्रिम रंग रहता है, जो बालकों के लिए हानि-

कारक है।

होटल में आइस्क्रीम, पुडिंग और मिल्कशेक आदि पदार्थों में इमल्सीफायर और स्टेबीलाइज़र नामक रसायन मिलाए जाते हैं। सभी खाद्य पदार्थों को स्वादिष्ट और सुगंधित बनाने के लिए उसमें फ्लेवरींग एजन्ट मिलाया जाता है। इन फ्लेवरींग एजन्टों की संख्या 3500 जितनी होती है। किसी भी खाद्य पदार्थों को ज्यादा टिकाने के लिए उनका कारखानों में प्रोसेसिंग होता है, इस कारण उसके पोषक तत्त्व, मूल रंग, स्वाद और सुगंध नष्ट हो जाते हैं।

नुडल्स, बिस्किट, केक, कॉफी, आलू की चिप्स, डिब्बे में पैक सब्जियाँ, टिन फूड में 50 जाति के कृत्रिम रंग, 13 प्रकार की मिठास, 70 तरह की खुराक का रंग – रूप बदलने के रसायन (टेक्सचर मोडीफायर्स), 43 प्रकार के प्रिजर्वेटिव (खाद्य को टिकाने वाले रसायन), 13 जाति के एन्टीऑक्सीडेंट रसायन आदि 3794 प्रकार के रसायन तैयार खाद्य पदार्थों में मिलाये जाते हैं।

चीज़, पनीर आदि में नाइट्राइट्स नामक रसायन मिलाया जाता है, जो प्रतिदिन खाने से लीवर और किडनी खराब होती है।

बाजारों में दुकानदार जो मिलावट करते हैं, वह

हम जानते हैं, परंतु कारखानों में सफेद कॉलरधारी उद्योगपति टेकनोलॉजी द्वारा जो मिलावट करते हैं वह हम पकड़ नहीं सकते। अखबार वाले भी टेकनोलॉजी की इस मिलावट को प्रकट नहीं करते हैं। क्योंकि अखबार वालों को इन कम्पनिओं से विज्ञापन के पैसे मिलते हैं। चॉकलेट के प्रचार हेतु सिर्फ ब्रिटेन में 250 करोड़ रुपये के विज्ञापन प्रकाशित होते हैं। कॉफी के विज्ञापन के लिए 180 करोड़ रुपये, आलू की वेफर में 90 करोड़ रुपये शुगर केन्डी और च्युडिंगम के लिए 85 करोड़ रुपये और बिस्किट के विज्ञापन के लिए 86 करोड़ रुपये का व्यय होता है।

फलों का रस, जिसे सोफ्ट ड्रीक्स कहते हैं, उसमें सेब का रस, संतरे का रस और आम रस आदि में सेब, संतरा या आम्रफल का अंश भी नहीं रहता है, मात्र शक्कर, पानी, फ्लेवर और रसायन होते हैं। अतः सभी को सावधान होकर आरोग्य के खतरों से बचना चाहिए।

आज स्वाद-रसिक जीव आरोग्य अथवा मौत का विचार किए बिना अनारोग्य के कुएँ में कूद रहे हैं। जबकि आरोग्य प्रेमी जीव सूक्ष्म बात विचारकर अशुद्ध और मिलावटी वस्तुओं के त्याग को हितकारी समझते हैं।



देवद्रव्य राशि का उपयोग साधर्मिक के उत्थान में...?

पूज्य आचार्य श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

प्रश्न :

हमारे यहाँ चढ़ावा आदि पैसों में क्यों बोले जाते हैं? इत्यादि बातें आपने सुंदर तरह से तर्कसहित समझाईं और वे समझ में भी आ गईं। हमारे श्रीमंत श्रावक प्रभुभक्ति के, प्रतिष्ठा आदि के चढ़ावों में बिना प्रेरणा किये भी करोड़ों की बोली बोलते हैं। पर वे ही श्रीमंत साधर्मिक, जीवदया, अनुकंपा आदि में इतनी उदारता नहीं दिखाते। इसलिए अनेक संघों में देवद्रव्य की विशाल राशि जमा पड़ी हुई होती है। तो इस द्रव्य का गरीब और दुःखी लोगों के उद्धार में उपयोग नहीं करना चाहिए? कमजोर साधर्मिक के उत्थान में नहीं करना चाहिए?

उत्तर :

दाताओं ने जिस उद्देश्य से दान दिया हो उस उद्देश्य से विपरीत तरीके से उन पैसों का उपयोग करना यह बाकायदा गुनाह है। उसे betrayal of the

donor कहते हैं। गांधीजी ने भी जब ऐसा प्रस्ताव उनके सामने आया था, तब दान की रकम का अलग उद्देश्य में उपयोग करने का निषेध किया था। सुनने के अनुसार आजादी की जंग के लिए बहुत बड़ा फंड इकट्ठा हुआ था। उस दरमियान देश के कुछ हिस्सों में दुष्काल का हजारों लोगों पर असर पड़ा था। इसलिए कुछ लोगों ने गांधीजी को मशवरा दिया कि, आजादी के फंड को इन असरग्रस्त लोगों के लिए इस्तेमाल करना चाहिये। तब गांधीजी ने स्पष्ट इनकार कर दिया था कि, लोगों ने जो फंड आजादी के लिए दिया है, उसे मैं इस दूसरे उद्देश्य में नहीं दे सकता।

सुप्रीम कोर्ट में ई. स. 1962 में जो 634 नंबर का केस हुआ था, उसका विवरण भी जानने जैसा है। यह केस श्री छोटालाल लल्लूभाई आदि ने मुंबई के चैरिटी कमिश्नर आदि के सामने किया था। हुआ ऐसा था कि, भरुच वेजलपुर के श्री झवेरचंद डाह्याभाई नाम के श्रावक ने अपनी मृत्यु के बाद



अपनी संपत्ति के प्रबंध के लिए एक वसीयतनामा बनवाया था। उसमें हर वर्ष पर्युषण के बाद हो रहे स्वामीवात्सल्य के भी कुछ रकम अलग से रखी गई थी। पर ई. स. 1952-53 के दौरान रेशनिंग के प्रतिबंध के कारण स्वामीवात्सल्य नहीं हो सका था। तो मुंबई के चैरिटी कमिश्नर ने भरूच डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में उस स्वामीवात्सल्य की रकम को अन्य शैक्षणिक कार्य के लिए उपयोग में लेने की दरखास्त की। डिस्ट्रिक्ट कोर्ट ने मंजूरी दे दी; इसलिए केस मुंबई हाई कोर्ट में गया। वहाँ भी मंजूरी मिलने पर आखिर में केस सुप्रीम कोर्ट में गया। वहाँ चीफ जस्टिस सहित अन्य चार जज, कुल पाँच जजों की बेंच के समक्ष यह केस चला। ई. स. 1965 के 22 जनवरी के दिन पर इस केस का निर्णय आया। इस फैसले में डिस्ट्रिक्ट कोर्ट की और मुंबई हाई कोर्ट की बहुत सी भूलों को बताया गया था। और चैरिटी कमिश्नर की अर्जी अन्यायपूर्ण है ऐसा घोषित करके उनकी याचिका को ठुकरा दिया गया था।



दाता दान देते समय स्वतंत्र होता है। उसकी इच्छा कमजोर साधर्मिकों के उत्थान की या गरीबों की अनुकंपा की हो तो कोई उन्हें रोकता नहीं है। और ऐसी भावना वाले श्रावक इस क्षेत्र में भी लाखों-करोड़ों रुपये खर्च करते ही हैं। कुछ श्रावक दोनों क्षेत्रों में लाभ लेकर उदार दिल से दान देते ही रहते हैं।

प्रश्न :

पर देवद्रव्य की इतनी जरूरत ना होने पर भी बेशुमार देना, और गरीबों को आवश्यकता होने पर भी कम देना, इसमें कौनसा विवेक है?

उत्तर :

जरूरत तो दोनों को 10 रुपये की ही है। पर भिखारी को 10 रुपये देने वाला सुपुत्र पिताजी को 100 रुपये दे तो उसमें उसकी पितृभक्ति की अभिव्यक्ति है, उसमें कोई अविवेक नहीं है। ऐसा ही प्रस्तुत प्रश्न के लिए समझना चाहिये।

बाकी प्रभु को तो कुछ भी जरूरत नहीं है। प्रभु का मंदिर बने या ना बने, प्रभु की भक्ति हो या ना हो, इससे प्रभु के अनंत सुख में या केवलज्ञान में अंश मात्र भी फर्क नहीं पड़ता। पर प्रभु की, प्रभु के मंदिर की और प्रभु की भक्ति की हमें जरूरत है। क्योंकि इसके द्वारा हमारी आत्मा पापी से पुण्यशाली बनती है। क्रोधादि दोषों की चंगुल से छूटकर क्षमादि गुणों का मालिक बनती है। संसारभ्रमण को रोककर मोक्ष मंजिल की पथिक बनती है।

और सामान्यतः हमारी मानसिकता ऐसी होती है कि, देरासर सामान्य हो, छोटा हो तो विशेष भक्ति नहीं उछलती। पर वह यदि विशाल हो, भव्य हो तो भक्ति में हम एकतान हो जाते हैं। भव्य जिनालयों के निर्माण में दान भी करोड़ों में चाहिये ना!

प्रश्न :

चलो, भव्य जिनालय का निर्माण हो गया, दान के प्रवाह की दिशा अब तो बदलनी चाहिये ना?

उत्तर :

निर्मित हुए जिनालय के रख-रखाव के लिए क्या पैसे नहीं चाहिये होते हैं? आज की महंगाई में वार्षिक खर्च भी 6 या 7 आंकड़ों तक पहुँच जाता

है, तो कही पर 8 तक भी।

देरासर के जीर्णोद्धार आदि के कारण अचानक बड़ी रकम की जरूरत पड़ जाये तब फंड अगर जमा हो तो कार्य आसानी से हो जाता है। कच्छ के भूकंप के समय जो मंदिर धराशायी हो गये थे उन्हें सहजता से फिर से खड़ा इसी देवद्रव्य की सुलभता के प्रभाव से किया गया था।

प्रभु शासन की तो ऐसी व्यवस्था है कि कोई एक छोटे से गाँव में जिनालय के जीर्णोद्धार या नव-निर्माण के लिए रकम की जरूरत पड़ जाये; तो भारतभर के किसी भी संघ के पास जो देवद्रव्य जमा होता है उसका उपयोग किया जाता है। अरे! भारत के बाहर प्रदेश से भी उसके लिए देवद्रव्य उपयोगी बनता है। अलग-अलग संघ इसके लिए करोड़ों रुपयों का फंड इकट्ठा भी करते हैं।

महाराष्ट्र के सांगली में स्टेशन के सामने जवाहर सोसायटी नाम की एक सोसायटी है। जिसमें तकरीबन आधे परिवार जैनों के और आधे परिवार हिंदूओं के थे। सोसायटी ने दोनों को अपने-अपने मंदिर बनाने के लिए 1-1 प्लॉट दिया। हमारा श्री धर्मनाथ भगवान का शिखरबंधी भव्य जिनालय तैयार हो गया। उसकी भव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा भी स्व. पूज्यपाद गुरुदेव श्री विजय जयशेखर-सूरीश्वरजी म. सा. की पावन निश्रा में हुई। उसके कुछ वर्षों के बाद जब वहाँ जाना हुआ तब देखा कि दूसरा मंदिर फंड के अभाव से प्लीन्थ तक आकर अटक गया था।

देवद्रव्य में अच्छी-खासी रकम जमा हो गई है, तो अनुकंपा आदि में खर्च कर डालो। यदि संघ ऐसा करने लगे तो हमारे देरासरो की हालत क्या हो जाएगी? यह बात सबको शांति से सोचनी चाहिए।

भारत सरकार ने ट्रस्ट एक्ट बनाने के बाद धार्मिक ट्रस्टों के सरप्लस धन का स्वयं उपयोग कर सके, उसके लिए प्रजा की सहमति मिले, धार्मिक संस्थाओं के अग्रणियों की राय मिले, उसके लिए तेंडुलकर पंच की नियुक्ति की। उनके समक्ष जैनों की और से सेठ श्री कस्तूरभाई लालभाई उपस्थित हुए थे। तब पंच ने बार-बार प्रश्न उठाया था कि आपके खर्चे निकलने के बाद जो सरप्लस रकम होती है, उसका उपयोग सरकार करे तो आपको क्या परेशानी है? तब श्री कस्तूरभाई ने बार-बार स्पष्टता की थी कि हमारे वहाँ ऐसे सरप्लस रकम होती ही नहीं है। जो है, वह भी हमारे कार्यों के लिए कम पड़ती है। क्योंकि भूकंप, बिजली गिरने पर, अतिवृष्टि हो तब हमारे जो नुकसान पाये हुए आबू देलवाड़ा आदि अमूल्य तीर्थों के जीर्णोद्धार के लिए लाखों करोड़ों रुपयों की हमें कभी भी जरूरत पड़ सकती है। उस समय हम किसके पास भीख माँगने जायें? भूतकाल में तो विधर्मियों ने हमारे 3000 मंदिर तोड़ डाले हैं। एक भी वापस नहीं मिला। तो अब हम एक-एक मंदिर पैसों के अभाव से गँवाते जायेंगे तो कुछ ही सालों में जैन मंदिरों का तो नाम भी नहीं रहेगा।

दूसरी समझने जैसी बात यह है कि फंड जिसके पीछे खर्च करना होता है उसके प्रचुर या अल्प पुण्य की भी फंड पर असर पड़ती है। ऐसा तकरीबन सभी का अनुभव है। और आपने

भी प्रश्न में बताया ही है, कि प्रवचनकार महात्मा आवश्यकता के समय पर साधर्मिकों के लिए या गरीबों के लिए जोरदार प्रस्तावना के साथ सभा को प्रेरणा करते हैं, फिर भी मर्यादा में ही थोड़ा फंड जमा होता है। जब कि प्रभु के नाम पर फंड या बोली लगती है तब वे ही श्रावक लाखों रुपयों का बहुत ही सहजता से आनंद और उल्लास से लाभ लेते हैं। हमें समझना ही पड़ेगा कि प्रभु का पुण्य प्रचंड है, और साधर्मिक आदि का पुण्य कमजोर है। इसीलिए भिखारी भी यही बोलता रहता है कि, भगवान के नाम पर कुछ दे दो...!!

भगवान के अलौकिक पुण्य को हम भूल जायें ऐसा कैसे चलेगा? उस पुण्य के प्रभाव से जमा हुए फंड को दूसरे उद्देश्य में खर्च करना, यह शास्त्र-विरुद्ध तो है ही पर लोक व्यवहार के विरुद्ध भी है। इसलिए ऐसे विचार कभी भी न्यायपूर्ण नहीं हो सकते।

एक बात है; प्रभु की प्रतिष्ठा, अंजनशलाका के समय पर करोड़ों रुपये के अचिन्त्य चढ़ावे भी हो जाते हैं। उस समय एन्कर या संगीतकार यदि यह



सोचे कि यह भव्य चढ़ावे तो मेरी प्रतिभा से हुए हैं, तो यह नितांत अयोग्य है। क्योंकि इस चढ़ावे में मुख्य परिबल (कारण) प्रभु का प्रभाव ही होता है। वही निश्चादाता गुरुदेव, वही एन्कर, वही संगीतकार और वही सभा हो तो भी, साधर्मिक आदि का फंड इतना भव्य नहीं करवा सकते। अरे उससे आठ या दसवें भाग का भी इकट्ठा करने में दम निकल जाता है।

इससे समझ लेना चाहिये कि, भगवान के प्रभाव से जो होता है, उसमें भगवान के प्रभाव का स्वीकार करना चाहिये। उसका प्रतिकार नहीं करना चाहिये। भगवान के ऐसे प्रचंड पुण्य प्रभाव को जानकर भगवान के प्रति की श्रद्धा-भक्ति बढ़ानी चाहिये, पर उस द्रव्य के उपयोग में खोट नहीं निकालनी चाहिये।

बाकी, यह बात निरंतर याद रखने जैसी है कि, श्री जैन शासन की हर एक बात आत्मकल्याण को केन्द्र में रखकर की गई है। क्योंकि प्रभु ने शासन की स्थापना इसीलिए ही तो की है। आत्मा अतिन्द्रिय है, अदृश्य है, पांचों में से एक भी इंद्रिय का विषय नहीं है। इसलिए उसका तत्काल और दीर्घ-कालीन कल्याण या अकल्याण किसमें है, यह हमारी बुद्धि का विषय नहीं है। पर यह बात आत्मा को, उसकी तीनों काल की अवस्थाओं को साक्षात् प्रत्यक्ष देखने वाले केवली भगवंतो का विषय है। इसलिए हमारे लिए सर्वज्ञ भगवंतो के वचन, उनके प्रति समर्पण, ग्रंथकारों द्वारा रचे हुए शास्त्र, आदि आत्मा के कल्याण-अकल्याण का निश्चय करने का आधार है। और शास्त्र तो देवद्रव्य का उपयोग उपाश्रय आदि में करने को भी मना करते हैं, तो अन्यत्र उपयोग करने से कल्याण ही नहीं सकता, अकल्याण ही होता है।

इसके बारे में विशेष बातें आगामी लेख में...

अस्तित्व अपरिवर्तित होता है।

साधना के भीतर

पूज्य पंन्यास श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म. सा.

प्रभु का जन्म होते ही
सृष्टि में आल्हाद हुआ,
प्रकृति में स्वयंभू उत्सव होने लगा,
जलवायु की चेष्टाएँ प्रसन्न नजर आने लगीं,
दिशाएँ उद्योतमय हुईं,
पृथ्वी का एक-एक कण उर्जावंत सा हो गया,
वृक्षों की अभिव्यक्ति में भी हर्ष उमड़ रहा था।
प्रभु के जन्म से ये सब क्यों हो रहा था?
प्रभु के ज्ञान में जन्म समय का यह सारा प्राकृतिक
बदलाव ज्ञात था।
नरक में भी जो क्षणिक आनंद की लहरें उठी, वह
भी प्रभु ने जान ली थी।
लेकिन प्रभु इन सारे परिवर्तन से खुद को पृथक् ही
देख रहे थे।
क्योंकि ये सब परिवर्तन पुद्गल में हुए थे, पर में हुए
थे,

और उनका निमित्त था **'तीर्थकर नामकर्म'** और
वह भी पर था।

उस कर्म के बंधन में निमित्त प्रभु की आत्मा थी,
लेकिन बंधन में निमित्त बनने वाली आत्मा को भी
प्रभु अपना स्वरूप कहाँ समझते थे?

शुभ या अशुभ कोई भी कर्म आखिर में है तो बंधन
ही!

अगर वो बंधन न होता, तो उसकी निर्जरा करने की
कोई आवश्यकता ही नहीं होती।

जो बंधन होता है, उसी की निर्जरा होती है।

अतः

प्रभु, बंधन में निमित्त बनने वाली अपनी अवस्था
को भी शुद्ध आत्मा के स्वरूप में स्वीकार नहीं
करते, आस्था नहीं रखते।

सारे बंधन की योग्यता से मुक्त शुद्ध-आत्मा द्रव्य
को ही प्रभु अनुभव से अपना स्वरूप मानते थे।

आत्मा की अवस्थाएँ बदलती रहती हैं।

अस्तित्व अपरिवर्तित होता है।

बदलाव में ही जब अपने होने की अनुभूति होती हो,
तो बदलाव होते ही रहेंगे, जन्म-मरण की श्रृंखला अनिरुद्ध ही रहेगी,
आस्था ही आपका होने का ढंग तय करती है।

जब अपना होना अपरिवर्तित महसूस होने लगता है,
तब से परिवर्तन की श्रृंखला सिमटना शुरू हो जाती है,
जन्म-मरण की धारा समाप्त होने लगती है।
आस्था अपरिवर्तित में हो, तो होने का ढंग भी

परिवर्तन शून्य बनता है,
जिसे मोक्ष कहते हैं।

प्रभु खुद को परिवर्तन में नहीं, वरन् अपरिवर्तित में अनुभव कर रहे थे,
अवस्थाओं में नहीं, किंतु अस्तित्व में महसूस कर रहे थे।

निर्वाण की घटना भले ही 72 वर्ष की आयु में घटी,
परंतु प्रभु ने पहले से ही मोक्ष में ढलना शुरू कर दिया था।

यह जन्म तो रहे-सहे कर्मों के विशीर्ण होने के लिए ही था।

हे प्रभु!

आपका निर्मल दर्शन, हमें सम्यग्-दर्शन की निर्मलता दे!
आपकी शुद्ध-आस्था को समझकर, मेरी आस्था भी शुद्ध हो,
जहाँ आप अपने आप को महसूस कर रहे हैं,
उससे अतिरिक्त स्थानों में, मैं आपको ढूँढ रहा हूँ।
मुझे ऐसी दृष्टि दीजिए,
जहाँ आप हो मैं वहाँ आपको महसूस कर पाऊँ...



Everything is Online, We are Offline 10.0

पूज्य मुनिराज श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

कुछ दिनों पूर्व जूही चावला के द्वारा दायर याचिका सर्वोच्चन्यायालय ने खारिज तो की ही, ऊपर से 20 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया। इससे एक स्पष्ट संदेश दिया गया कि, जो हमसे (5G से) टकरायेगा, चूर- चूर हो जायेगा।

5G नामक बादशाह की सवारी जब निकल रही हो, तब फालतू लोगों को बीच में आने की इजाजत नहीं है। यदि करना है तो स्वीकार करो, सम्मान करो मगर शिकायत करने का आपका अधिकार अब धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है। लगता है, सर्वोच्च न्यायालय के ऊपर भी कोई बैठा है। तकनीकी विकास के इस जमाने में सबसे ज्यादा यदि कुछ बँट रहा है तो, उसका नाम है भ्रम। ज्ञान एवं सत्य ढूँढने वालों को अब बहुत ही

संघर्ष करना पड़ेगा। संघर्ष सिर्फ अज्ञान से या असत्य से ही नहीं है, अज्ञानी और असत्यवादियों से भी करना पड़ रहा है। इतना ही नहीं, सबसे अधिक संघर्ष अज्ञानताप्रेमी, सुविधाप्रेमी और व्यक्तिप्रेमियों के समुदाय से करना पड़ रहा है।

ऐसा ही संघर्ष करने वाले प्रोफेसर हेन्री लाई से मैं आपका परिचय करवाना चाहूँगा। जो लोग थोड़ी बहुत जानकारी पाकर बोल रहे हैं कि, 'मोबाइल फोन का रेडिएशन हम इन्सानों के लिए नुकसान-कर्ता नहीं है, और ऐसा कोई सबूत भी नहीं है कि जो मोबाइल के रेडिएशन को नुकसान-कारक सिद्ध करता हो, ऐसे लोगों के लिए यह लेख बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

सबसे पहले मोबाइल फोन रेडिएशन के नुकसान



का विचार करने के बाद 5G के रेडिएशन के नुकसान की चर्चा करेंगे।

वॉशिंगटन, अमेरिका के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. हेन्री उस वक्त चौक गये, जब उन्होंने चूहों पर मोबाइल रेडिएशन का प्रयोग करके देखा कि चूहों के दिमाग में रेडिएशन ने अच्छा खासा नुकसान पहुँचाया था। Non Ionizing Radiation का यह असर देखकर उन्हें यह भी पता चला कि, आज भी ऐसे ही रेडिएशन हमारे मोबाइल फोन में से निकल रहे हैं। सन् 1995 का वो वक्त था और उन्होंने एक रिसर्च पेपर जारी कर दिया।

उस समय अमेरिका की एक विख्यात कंपनी मोटोरोला तक यह बात पहुँची, और उस कंपनी ने दो कार्य किये, 1) प्रोफेसर को अपने साथ मीटिंग के लिए आमंत्रण दिया, और साथ में 2) प्रो. हेन्री को रोकने के भी प्रयास किए।

Wireless Technology of Research से जुड़ी कंपनियों ने और सेलफोन कंपनी मोटोरोला इत्यादि ने वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी को लैटर लिखा, और प्रो. हेन्री एवं उसके साथी (रिसर्च पार्टनर) नरेंद्र प्रताप सिंह को निकाल बाहर करने का बहुत अधिक प्रेशर किया। यहाँ तक धमकी भी दी कि, यदि आप इन्हें नहीं हटायेंगे तो आप को मिल रहे

रिसर्च फंडिंग भी बंद करवा देंगे। 25 मिलीयन डॉलर्स की फंडिंग बंद होने की धमकी से अच्छे-अच्छे शिक्षा प्रतिष्ठान झुकने को मजबूर हो जाते हैं, लेकिन यूनिवर्सिटी ने फिर भी प्रो. हेन्री को निकालने से इन्कार कर दिया। प्रो. हेन्री विज्ञान से रिश्ता रखते थे। उन्हें पहली बार पता चला कि उन्हें कैसी गंदी राजनीति में घसीटा जा रहा है।

प्रो. हेन्री ने सन् 1995 से इसकी निष्पक्ष जाँच करके अंतिम निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए कमर कस ली। उन्हें पता चला कि, मोबाइल रेडिएशन को जब-जब किसी निष्पक्ष वैज्ञानिक ने Harmfull (नुकसानकर्ता) डिक्लेर किया, तब-तब मोबाइल कंपनियाँ अपने पैसों से नौकरी में रखे हुए वैज्ञानिकों को इनके सामने खड़ा कर देती थीं। और वे ऐसा कहते थे कि मोबाइल रेडिएशन हम इन्सानों के लिए बिल्कुल भी नुकसानकर्ता नहीं है। [मैंने वो रिसर्च भी पढ़ा है, जिस में साफ-साफ लिखा है कि, 'The bulk of scientific research is funded by private industry...']

लोगों तक सच पहुँचने से रोकने के लिए, वे लोग [जिसके आर्थिक हित समाविष्ट है] मुद्दे को भटकाने के लिए उस मुद्दे को विवाद पूर्ण यानी डिबेटेबल बना देते हैं। लोगों को कन्फ्यूज करने





के लिए कुछ वैज्ञानिकों को पैसे देकर उनसे गलत और विपरीत बयान दिलवाते हैं, ताकि लोग उलझन में फँसकर सच जान ना पाये। [जैसे कोरोना के बारे में डॉक्टर्स में दो विभाग हो गये ठीक वैसे ही।] सन् 2006 में इन सबने प्रो. हेन्री को आखिर Big Analysis करने के लिए प्रेरित किया। प्रो. हेन्री ने 1990 से लेकर 2006 तक (यानी 16 साल तक) मोबाइल फोन पर जितनी भी रिसर्च स्टडी हुई थी, उन सब को इकट्ठा करके पढ़ा। टोटल 326 स्टडीज़ को पढ़ने के बाद जो निष्कर्ष निकला, उसमें 50% रिसर्च मोबाइल रेडिएशन को Harmfull (नुकसानदाई) और 50% रिसर्च रेडिएशन को Non Harmfull (नुकसान रहित) बता रही थीं।

फिर प्रो. हेन्री ने इस 326 स्टडीज़ को दो विभागों में बाँटा। 1) स्वतंत्र (Independent) वैज्ञानिकों (Scientists) के द्वारा की गई स्टडीज़, और 2) Wireless कंपनियों के द्वारा स्वयं की फंडिंग से करवाई गई स्टडीज़।

सत्य अब उभरकर सामने आ गया। अब 70% रिसर्च इसे Harmfull बता रहे थे। मोबाइल रेडिएशन को जो 70% स्टडीज़ नुकसानदाई बता रहे थे, वो स्वतंत्र वैज्ञानिकों के द्वारा की गई रिसर्च थी। यानी वो किसी से पैसे लेकर रिसर्च नहीं कर

रहे थे। और जो कंपनियों के द्वारा फंडिंग देकर करवाई गई थी, उन स्टडीज़ में भी 30% वैज्ञानिक ऐसे थे जो रेडिएशन को खतरनाक बता रहे थे। यानी उस रेडिएशन से इन्सानों के DNA डेमेज हो सकते थे ऐसा स्पष्ट रूप से कह रहे थे।

अब Harmfull का Ratio 100% का था (जिसमें 70% स्वतंत्र वैज्ञानिक एवं 30% कंपनी के द्वारा नियुक्त वैज्ञानिक थे।) और नुकसानदेह नहीं मानने वालों में 70% कंपनी द्वारा नियुक्त वैज्ञानिकों की स्टडी और 30% स्वतंत्र वैज्ञानिकों की स्टडी शामिल थी।

इस बात को जब अमेरिकन कैंसर सोसायटी तक पहुँचाया गया, तो उन्होंने पहले तो कोई जवाब ही नहीं दिया। और बाद में बेवकूफी से भरा स्टेटमेंट दिया कि, मोबाइल की RF (रेडियो फ्रिक्वेंसी) में इतनी ताकत ही नहीं है कि वो इन्सान को नुकसान पहुँचा पाये। (हकीकत में वह सोसाइटी भी उन मोबाइल कंपनियों से मिली हुई है, जो मोबाइल बनाती है। भविष्य में हम ACS (अमेरिकन कैंसर सोसायटी) का भी चिट्ठा खोलेंगे, जिसे पढ़कर आप हिल जायेंगे।) CTIA (Wireless Asso.) ने भी प्रो. हेन्री के अध्ययन के सामने मौन धारण कर लिया था। क्योंकि वायरलेस इन्डस्ट्री आखिर 1.4 ट्रिलियन डॉलर की जो बन चुकी थी।

रेडिएशन नुकसानकर्ता है, इतना सिद्ध होने के पश्चात् अब 5G के रेडिएशन क्या नुकसान करते हैं, उन्हें तथ्यों के आधार पर देखेंगे। कुछ लोगों ने मुझे प्रश्न किया था कि 1G, 2G, 3G, 4G आया तब तो आपने विरोध नहीं किया था तो 5G का विरोध क्यों?

उन्हें मेरा जवाब है कि, तब इस बारे में मेरा कुछ भी अध्ययन ही नहीं था। बिना अध्ययन विरोध करने का या समर्थन करने का कोई मतलब नहीं है। दूसरी बात ये है कि, 1G, 2G, 3G और 4G की फ्रीक्वेंसी 1 से लेकर 6 GHz (गीगाहर्टज़) है, लेकिन 5G की फ्रीक्वेंसी 24 से लेकर 90 GHz (गीगाहर्टज़) है।

कहाँ 6 गीगाहर्टज़ और कहाँ 90, कितना बड़ा अंतर है दोनों के बीच में। जितनी फ्रीक्वेंसी High होती जाती है, उतनी ही वो डेन्जरस (खतरनाक) होती जाती है।

इस बारे में डेविड आईकी एक बहुत बड़े संशोधक एवं खोजी पत्रकार हैं और वह कई सारे वैज्ञानिकों से जुड़े हुए हैं। उनका कहना है कि, 5G से अपने शरीर के DNA डीफोर्म (डिस्टर्ब) हो सकते हैं, एवं अपनी चमड़ी भी जल सकती है। और बाकायदा इसके प्रयोग अमेरिकन आर्मी भी कर चुकी है।

इन्सान का शरीर एक एन्टेना है। हमारे माइन्ड के अंदर एक रीसेप्टर होता है, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक इम्पल्स होते हैं, जो संदेश को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने का कार्य करते रहते हैं। जब हम भाग-दौड़ वाली शहरी जीवन शैली से दूर जाकर कोई रिसोर्ट या हिल स्टेशन में आराम करने पहुँचते

हैं, तो दिमाग के अंदर पड़े इन इलेक्ट्रॉनिक इम्पल्स और रिसेप्टर्स को शांति मिलती है। मोबाइल टावर और रेडिएशन से मुक्त हवा में वो चैन की साँस लेते हैं। मगर अब आपकी इस चैन की साँस पर भी खतरा मंडरा रहा है, क्योंकि 5G टेक्नोलॉजी के समर्थक 20,000 सैटेलाइट अंतरिक्ष में छोड़े जा रहे हैं, और हर 100 मीटर्स के दायरे में 5G टॉवर्स लगाने जा रहे हैं। ताकि केबल और वायरिंग की परवशता ना रहे, सभी की निगरानी की जा सके, और जब चाहे तब दुश्मन को निपटाया जा सके। उनके दुश्मन वो ही

नहीं, जो उनको नुकसान पहुँचाना चाहते हैं, बल्कि उनके दुश्मन वो भी हैं, जो कोई भी नुकसान किये बिना शांति से अपना जीवन जी रहे हैं, मगर उनके किसी काम के नहीं हैं।

'Pain without Injury' 5G की मुख्य शक्ति है। हमारे इमोशन्स (संवेदनाएँ) जैसे रोना, हँसना, आश्चर्यचकित होना इत्यादि की भी एक फ्रीक्वेंसी होती है, जिसकी अलग-अलग रेंज होती है। U.S Army के द्वारा मोबाइल रेडिएशन का एक सफल प्रयोग किया गया था, जिसमें दो अलग-अलग कमरों में, दो अलग-अलग ग्रुप्स (लोगों के समुदायों) को रखा गया और उस पर रेडिएशन छोड़ा गया था। जिस पर हाई फ्रीक्वेंसी के रेडिएशन को छोड़ा गया, वे लोग थोड़ी ही देर में विविध शारीरिक समस्याओं के शिकार होने के साथ-साथ आपस में लड़ाई करने लगे थे। उनमें चिड़चिड़ापन आ गया था, जब कि लो लेवल की फ्रीक्वेंसी में छोड़े गये रेडिएशन वाले लोगों में शांति थी और समस्याएँ भी ना के बराबर थी।

चुनाव आपको ही करना है कि आपको सुविधा चाहिए या शांति?

स्पीड चाहिए या स्वास्थ्य?

सफलता चाहिए या समाधि!



संघ संवेदना संकल्प

“प्रियम्”

Real Need /

संघ की व्यक्तिगत या समष्टिगत, सभी समस्याओं का समाधान वस्तुपाल है। बस, वस्तुपाल को तैयार करो, बाकी सब कुछ वस्तुपाल देख लेगा। हम और सब कुछ खड़ा कर देते हैं, फिर वस्तुपाल को खोजने के लिए निकल पड़ते हैं। पर वस्तुपाल ढूँढने पर भी नहीं मिल पाता, क्योंकि हमने वस्तुपाल को खड़ा किया ही नहीं। बाद में खड़ा किया हुआ सब कुछ या तो धराशायी हो जाता है, या वह चलता भी हो तो भी उसका नायक वस्तुपाल ना होने की वजह से दूसरा ही कुछ चलता है।

ओ वस्तुपाल! आज आपका अकाल है। आप आ जाओ। एक दिन के लिए भी आ जाओ। हमें आपकी शासन निष्ठा दे जाओ, हमें आपकी परिणति दे जाओ। हमें आपके जैसा गुरु समर्पण दे जाओ। हमें आपके जैसी निःस्पृहता दे जाओ।

हमें आपके जैसा जैनत्व दे जाओ। हमारे पास अस्तित्व नहीं है, अस्तित्वाभिमान है। हमें आपका अस्तित्व दे जाओ।

पू. आ. वर्धमानसूरिजी देव बन गये। वस्तुपाल के प्रति के अहोभाव के कारण वे कौन-सी गति में गये, वह जानने का प्रयास किया। पर अपने ज्ञान से वह जान न सके, इसलिए वे श्री सीमंधर स्वामी भगवान के पास गये और पूछा।

प्रभु ने कहा,

**अत्रैव पुष्कलावत्यां, विजयायामजायता।
नगर्यां पुण्डरिकिण्यां, पुण्डरिक इव श्रियः॥**

**कुरुचन्द्राभिधो राजा, राजान्यावलिवन्दितः।
सम्यगदृष्टि शिरोरत्नं, सत्कीर्तिसुरभिस्थितिः॥**

यही पुष्करावर्त विजय में पुंडरीकिणी नगरी में जैसे लक्ष्मी का निवास हो, ऐसा वह वस्तुपाल कुरुचन्द्र नामक राजा बना है। उन्हें राजाओं की श्रेणी वंदन करती है, वे समितियों में शिरोमणि हैं



ओ वस्तुपाल!

आज आपका अकाल है।

आप आ जाओ।

एक दिन के लिए भी

आ जाओ।

और कीर्ति से शोभायमान हैं।

आखिर में संयम लेकर वह राजा, सर्वोत्कृष्ट अनुत्तर देवलोक में 'विजय' विमान में महद्दिक बनेगा। वहाँ से च्यवन करके फिर से राजा बनेगा, संयम लेगा और मोक्ष में जायेगा।

बात 'अस्तित्व' की है। शांत चित्त से विचार कीजिये। कैसा होगा वस्तुपाल का अस्तित्व! कैसा परलोक! कैसा भविष्य! खुद श्री सीमंधर स्वामी प्रशंसा करते हैं, ऐसी भूमिका! अनंत भवचक्र का चुटकी में पूर्णविराम लाने वाला परिणाम। कैसा होगा उनका मन। कैसी होगी उनकी विचारधारा। कैसा होगा उनका हृदय। कैसी होगी उनकी विशुद्धि।

एक ऐरावत हाथी निराभिमानी हो, और एक सूअर अभिमान से भरा हुआ हो, यह कैसा लगेगा? वस्तुपाल और हमारे साथ ऐसा ही कुछ हुआ है, क्या ऐसा नहीं लगता? हमारे भीतर कितने दोषों की विष्टा है, कितनी विचित्रताओ की गंदगी है, कितनी हलक में अटकी हड्डियां है, कितने अतिचारों और अनाचारों की दुर्गाध है, क्या हम यह

सब नहीं जानते? फिर भी हमें हमारे अस्तित्व का अभिमान होता है? सूअर जुगुप्सनीय होता है, पर यदि वह खुद को मिली हुई विष्टा और गंदगी का अभिमान करे, तो यह ज्यादा जुगुप्सनीय लगता है। हम खराब तो हैं ही, पर हम अस्तित्वाभिमान करेंगे तो हम और ज्यादा खराब बन जाएंगे।

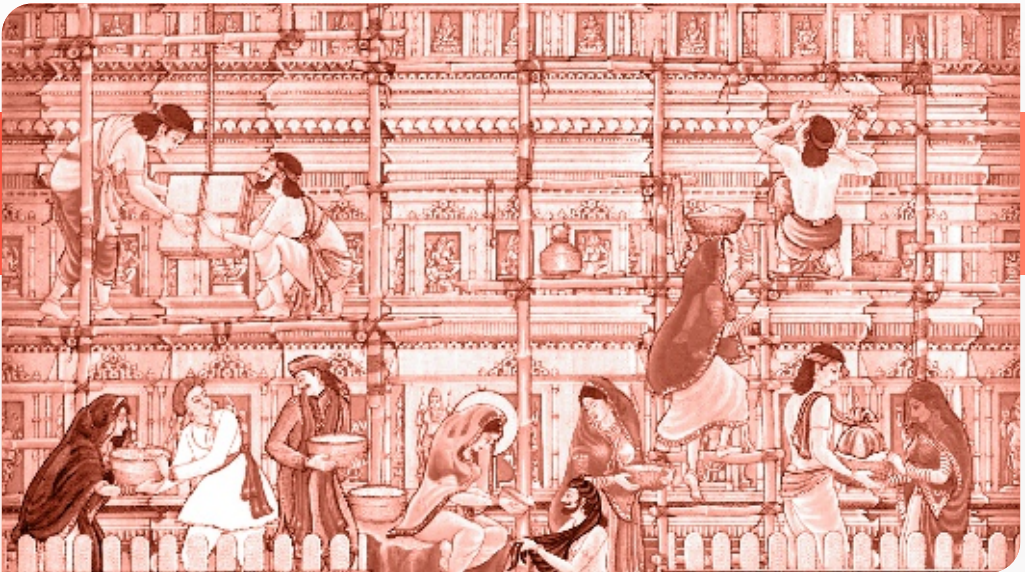
श्री सीमंधर स्वामी भगवान से दूसरा प्रश्न पूछा गया, 'श्रद्धावर्या अनुपमा देवी की कौन-सी गति हुई है?' प्रभु ने कहा, "वे यहाँ ही श्रेष्ठीपुत्री हुईं। आठ वर्ष की आयु में हमारे पास दीक्षा ली, घाती कर्मों का क्षय किया है, और अभी यहाँ पर केवली पर्षदा में विराजमान हैं।

अनुपमा देवी का देव-गुरु बहुमान, आबू के देलवाड़ा के बेनमून जिनालय बनाने में उन्होंने अपनी डाली हुई जान, महामूल्यवान साड़ी के पल्लू से महात्मा का सीरा वाला पात्रा पोंछने की उनकी सहज भक्ति...

याद आता है, योगदृष्टि समुच्चयः

गुरुभक्ति प्रभावेन, तीर्थकृद्दर्शनम् मतम्।

समापत्त्यादिभेदेन, निर्वाणिकनिबन्धनम्॥



गुरुभक्ति के प्रभाव से साक्षात् तीर्थकर का दर्शन होता है, तीर्थकरों के गुणों की प्राप्ति होती है, और अवश्य मोक्ष मिलता है।

सीमंधर स्वामी को तीसरा प्रश्न पूछा गया।

“तेजपाल” कौनसी गति में जाएंगे?

प्रभु ने जवाब दिया, “वे पहले देवलोक में समकिति देव बनेंगे। इन्दु जैसी उनकी ऋद्धि होगी और क्रमशः चौथे भव में उनका भी मोक्ष होगा।”

हम स्तब्ध हो जायें ऐसी बात है। अपने आपसे पूछिए, इनमें हम कहाँ? शांति से इन महापुरुषों का निरीक्षण करेंगे, तो हमारा सारा अस्तित्वा-भिमान पिघल जायेगा, अहं की अंतिम मृत्यु होगी, जिसके बाद पुनर्जन्म नहीं होगा। उसे बौद्ध दर्शन का मोक्ष कह सकते हैं। जिसमें क्षण सन्तति की अंतिम क्षण नष्ट हो जाती है, और फिर उत्पत्ति नहीं होती। उसके बाद हमारा जैन दर्शन का मोक्ष हो सकेगा। अहं का सम्पूर्ण नाश - हमारे शुद्ध आत्म स्वरूप का उत्पाद बनेगा।

जब तक अहं है, तब तक हमारी आत्मा की भी अवनति है। नये पंथ मोक्षमार्ग नहीं है, उसका महत्वपूर्ण कारण यह है, कि वे कम-ज्यादा अंश से संघ विरुद्ध हैं। यदि आज के नये ग्रुप, मंडल, परिवार आदि भी संघ विरुद्ध हो जाए तो, वह भी मोक्षमार्ग नहीं है।

ग्रुप्स /

ग्रुप यदि संघ के अंतर्गत हो, संघ की शक्ति बढ़ाने वाले हो, संघ के प्रतिस्पर्धी नहीं होने के भाव को खड़े करने वाले हो तो ठीक, लेकिन संघ से जुड़े हुए को अलग करने वाले हो, तो वैसे ग्रुप्स को ग्रुप्स नहीं कहा जाता, अनुमोदनीय भी नहीं कहा जायेगा। बल्कि जैनत्व विरोधी

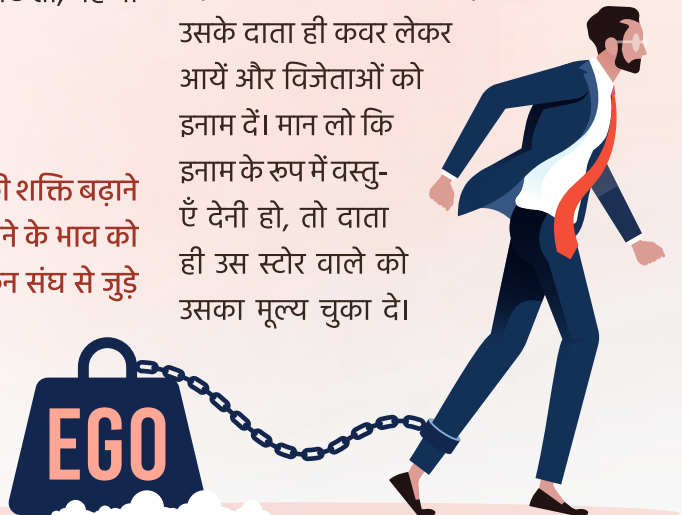
और शोचनीय कहा जायेगा।

हमारे और संघ के बीच जो आ जाता है, यह हमारा जहर है। कभी ‘नाम’ जहर बनता है, कभी ‘पैसा’ जहर बनता है, कभी ‘पोस्ट’ जहर बनती है, कभी ‘इगो’ जहर बनता है।

एक विचार ऐसा आता है कि, क्यों ऐसा नहीं होता, कि एक बिना ग्रुप का ग्रुप हो, जो सीधे संघ के साथ जुड़ जाये? जिसका ना कोई नाम हो, जिसमें ना कोई पद हो, जिसका ना कोई एकाउन्ट हो, संघ के हर एक प्रसंग को घर का प्रसंग मानकर उसकी शोभा बढ़ाये। शायद इसी ग्रुप को भगवान संघ कहते हैं। भगवान ने इसी की ही तो स्थापना की है।

अलग नाम रखना एकांत से गलत नहीं है। Depend, कि वह पुल बनता है, या दीवार बनता है? पर यदि नाम अलग तो हम अलग, संघ से भी अलग और दूसरे ग्रुप से भी अलग। ऐसा भाव आ जाए तो वहाँ अलग नाम गलत साबित होता है।

वह बिना नाम का ग्रुप बिना प्रसंग के भी दूसरी सेवा-प्रवृत्ति करे। मान लो उसमें पैसे की भी जरूरत पड़े, तो भी इस ग्रुप को दान के पैसे को छूने की मनाही हो। मान लो कि यह ग्रुप कोई परीक्षा ले, और उसमें इनाम देने हों, तो उसके दाता ही कवर लेकर आयें और विजेताओं को इनाम दें। मान लो कि इनाम के रूप में वस्तु-एँ देनी हो, तो दाता ही उस स्टोर वाले को उसका मूल्य चुका दे।



ग्रुप के नाम से एक भी रूपये का परिग्रह एक क्षण के लिए भी ना हो।

साथ ही ग्रुप में कोई पद न हो। अपने संघ में जो गुरु भगवंत आये उनके और संघ के जो अध्यक्ष वगैरह हो, उनके निर्देशों के अनुसार यह ग्रुप कार्य करता रहे।

मुझे पता है, अहं, नाम, पैसा, पोस्ट आदि के कारण से ही प्रवृत्ति का उल्लास जगता है। इसी तरह ग्रुप्स बनते हैं और चलते रहते हैं। पर इन सब कारणों से ग्रुप टूटता भी है। संघ के साथ संघर्ष होने के कारण ही यह सब होता है। और ग्रुप

चलता हो, तभी भी संक्लेश होने का, मानसिक कलुषितता होने के भी ये ही कारण होते हैं।

सीधा संघ के साथ जुड़ाव, भावना भरी संघभावना, अहं शून्य हृदय, निःस्वार्थ सेवा, समर्पण भरी सेवा क्यों नहीं?

सारा अभिमान निकाल फेंको। हृदय को संघ संवेदना से भर दो। 'वस्तुपाल' बनो। नख-सिख वस्तुपाल। जिनशासन का हार्द यहीं है। संघ का अभ्युदय भी यही है। और आत्मा का कल्याण भी यही है। हृदय में संघ नहीं, तो कुछ भी नहीं है। और संघ है तो सब कुछ है।

संघ जीवंत श्री महावीर स्वामी है। संघ साक्षात् श्री सीमंधर स्वामी है। संघ की यथाशक्ति आराधना हो इसलिए मैं यह संकल्प करता हूँ कि,

- 1 दिन की Minimum 10 मिनट संघ की किसी भी प्रकार की सेवा के लिए निकालूँगा।
- 2 सप्ताह में एक दिन Minimum 30 मिनट संघ सेवा के लिए निकालूँगा।
- 3 कोई भी काम नहीं होगा तो कम से कम संघ परिसर में काजा निकालूँगा।
- 4 संघ का किस तरह अभ्युदय हो उसकी चिंता करूँगा।
- 5 संघ के अभ्युदय के लिए मैं तन, मन, धन और समय का यथाशक्ति योगदान जरूर दूँगा।
- 6 संघ की किसी भी तकलीफ में मैं आधी रात को भी खड़ा रहूँगा।
- 7 संघ में होने वाले हर एक प्रसंग को मेरे घर का प्रसंग समझकर उत्सव करूँगा।
- 8 कोई भी मतभेद हुआ तो मैं अहं को बीच में नहीं लाऊँगा।
- 9 किसी भी नाम, पद, प्रशंसादि की स्पृहा के बिना मैं सेवा करूँगा।
- 10 मैं एक 'गुरु' को सर पर रखकर, उनके मार्गदर्शन के अनुसार आराधना करूँगा।
- 11 संघ के हर सदस्य को मैं आदर से देखूँगा और उनके साथ मधुर व्यवहार करूँगा।

संघ संवेदना संकल्प



परमतारक, परम श्रद्धेय श्री जिनाजा विरुद्ध लिखा गया हो तो त्रिविध मिच्छा मि दुक्कडम्।

गोडीजी का इतिहास - 4

पूज्य मुनिराज श्री धनंजय विजयजी म.सा.

मेरे प्रभु पारसनाथ

आंगन में कल्पवृक्ष पल्लवित होने पर जितना आनन्द प्राप्त नहीं होता, उतना आनन्द आज मेघाशा के हृदय में था। जब से पार्श्वनाथ प्रभु गृहांगन में विराजित हुए, तब से मेघाशा का मन-मयूर प्रसन्नता से नृत्य कर रहा था। वह प्रतिदिन प्रभुभक्ति के रंग से अपनी आत्मा को रंगता, और उसी में पूरा मग्न हो जाता था।

इसी दौरान पाटण में पूज्य आचार्य श्री मेरुतुंग-सूरिजी पधारें। मेघाशा प्रतिदिन गुरुमुख से जिन-वाणी सुनने हेतु जाता था। एक दिन उसने अपने मन में उद्भव हुई जिज्ञासा गुरु के समक्ष प्रकट करते हुए कहा,

“मेरे घर प्रभु पार्श्वनाथ पधारें हैं, उन्हें विराजित करने एवं उनकी भक्ति हेतु मुझे क्या-क्या करना चाहिए?”

गुरु ने बड़े मीठे शब्दों में उत्तर देते हुए कहा, “श्रावक श्रेष्ठ! यह तो मैं प्रभु के दर्शन करके ही बता सकता हूँ।”

यह सुनकर मेघाशा ने तुरन्त ही गुरुदेव को अपने गृहांगन

पधारने हेतु विनती की, और सौम्यमूर्ति गुरु ने सहर्ष यह विनती स्वीकार की।

दूसरे ही दिन मेघाशा अपने प्रभातिक कार्यों से निवृत्त हुआ, उसने प्रभुभक्ति की और आतुरता से गुरु के पावन पगले होने की प्रतीक्षा करने लगा। उसकी दृष्टि बार-बार द्वार की ओर जा रही थी। कुछ ही देर में शिष्यवृन्द के साथ गुरु आते हुए दिखे।

“पधारिए गुरुदेव! पधारिए। मेरे आंगन को पवित्र कीजिए।” मेघाशा ने गुरुदेव का स्वागत किया। फिर उन्हें जहाँ प्रभु विराजित थे, वहाँ लेकर गया।

अत्यन्त प्रभावशाली और नयनरम्य पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा देखकर आचार्यश्री मनोहर शब्दों से प्रभु की भावपूर्ण स्तुति करने लगे।



फिर उन्होंने मेघाशा से कहा, “हे मेघ! ये प्रभुजी और कोई नहीं, वरन् तेरे पिता खेतसिंह द्वारा भराए गए पार्श्वनाथ भगवान ही हैं। तू इन प्रभुजी को पारकर देश लेकर जा, वहाँ शिखरबंधी जिनालय बनवा और पूरे ठाठ-बाट के साथ प्रभुजी को विराजित कर। प्रभुजी की महिमा वृद्धिमान होगी।”

मेघाशा को लगा कि मानो गुरुदेव के मुख से अमृत की वर्षा हो रही हो। गुरुवचन के अनुसार

पारकर देश जाने हेतु उसने अपना रुई का व्यवसाय समेटा और 20 ऊँटों पर कपास व अन्य माल-सामान भरकर पाटण को अलविदा कहा।

जहाँ प्रतिमाजी की अंजनशलाका हुई, प्राण-प्रतिष्ठा हुई, ऐसी पाटण की भूमि पर 38 वर्ष तक अपने वात्सल्य की गंगा बहाकर प्रभुजी विदा हुए। इसके बाद प्रभुजी पुनः पाटण नहीं आए। फिर कहाँ विराजमान हुए....!!



प्रभु का चमत्कार

पाटण से रुई की गांठें 20 ऊँटों पर भरकर मेघाशा पारकर देश की ओर प्रयाण कर रहा था। वह सारे माल-सामान के साथ पाटण की सीमा से लगे कुणघेर गाँव पहुँचा। प्रभुजी भी साथ ही थे। यह पहला ही दिन था। पूरी तैयारियाँ की, प्रभुजी की भक्तिभाव से पूजा की। इतने में तो वहाँ भक्तों की भीड़ आने लगी।

प्रभु का प्रभाव अनुपम था, वे जन-जन की आस्था का केन्द्र थे। कुणघेर गाँव में प्रभुजी का रात्रि-निवास हुआ, तो वहाँ रहने वाले लोगों के मन में भाव आया कि जिस भूमि को प्रभु ने रात्रि-निवास करके पावन किया, वहाँ एक जिनालय का निर्माण होना चाहिए, और प्रभुजी के पगले स्थापित किए जाने चाहिए। तदनुसार वहाँ भव्य

जिनालय बना और पगले स्थापित किए गए।

इस प्रकार प्रभुजी जहाँ-जहाँ रात्रि-निवास करते वहाँ-वहाँ जिनालय बनता और प्रभुजी के पगले स्थापित होते। प्रभुजी ने पांच पड़ाव पार किए और छठे दिन भूदेशर पधारो। ये पांच पड़ाव इस प्रकार थे:

(1) कुणघेर, (2) आणंदपर, (3) राधनपुर-भीलोटा दरवाजा के बाहर वरखडी में पीलू के पेड़ के नीचे, (4) मोरवाड़ा, और (5) सुईगाम के बाहर डोडला तालाब के पास। वहाँ से 40-50 कि.मी. का मरुस्थल पार करके भूदेशर पहुँचे।

बीच में राधनपुर के पास एक चमत्कारिक घटना घटी। 20 ऊँट लेकर निकले मेघाशा ने प्रभुजी को

भी एक ऊँट पर विराजित किया हुआ था। जब वे राधनपुर पहुँचे तो कर वसूल करने वाले अधिकारी ने ऊँट गिने। गिनती में सिर्फ 19 ऊँट ही हुए तो वह बोला, “आप तो कहते हैं कि 20 ऊँट हैं, लेकिन मैंने गिने तो 19 ही निकले।”

मेघाशा बोले, “नहीं, मेरे तो 20 ऊँट हैं, शायद गिनने में गलती हुई होगी, आप फिर से गिनती कीजिए।” अधिकारी ने फिर से गिने। इस बार 21 निकले।

मेघाशा 20 ऊँट का कर देने के लिए तैयार थे, लेकिन सही गिनती का निर्णय नहीं होने के कारण मामला राजा के पास गया। राजा ने खुद ऊँटों की गिनती की। लेकिन अभी भी कभी 19 तो कभी 21 हो रहे थे। राजा ने आश्चर्य से मेघाशा से पूछा, “मेघाशा! ऐसा क्यों हो रहा है? इसका क्या रहस्य है?”

तो मेघाशा ने सोच-समझ कर कहा, “राजन्! इनमें से एक ऊँट पर प्रत्यक्ष प्रभावी श्री पार्श्वनाथ प्रभु विराजित हैं, इसलिए ऐसा हो रहा है।”

राजा ने कहा, “मेरे धन्य भाग्य कि प्रभु यहाँ पधारे। मुझे प्रभुजी के दर्शन करवाइए, मुझे अपने नयन पावन करने हैं।”

मेघाशा ने राजा को प्रभुजी के दर्शन करवाए। दर्शन करके राजा इतना प्रसन्न हुआ कि जहाँ प्रभुजी का रात्रि-निवास हुआ वहाँ उसने जिनालय का निर्माण करवाया, और प्रभुजी के पगले स्थापित किए। साथ ही मेघाशा का पूरा कर भी माफ किया।

मेघाशा ने कुछ दिन वहाँ रुककर फिर पारकर की ओर प्रयाण किया। रस्ते भूदेशर गाँव आया।



“जिन” को “निज” में समाना है।



पूज्य मुनिराज श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

Hello Friends,

तीर्थकर प्रभु बनने की यात्रा में हम अग्रसर हैं।

एक के बाद एक कदम बढ़ाते-बढ़ाते आज हम सोलहवें पद पर आकर खड़े हैं, **जिसका नाम है जिन पद।**

जिस शब्द की हम जैनों को बड़ी महिमा है, वह शब्द है 'जिन'। जो 'जिन' के अनुयायी व उपासक हों उन्हें 'जैन' कहा जाता है। 'जैन' होना हमारी पहचान का एक हिस्सा है, हमारे अस्तित्व का एक पर्याय है। हमारे गर्व और गौरव की बात है कि हम 'जैन' हैं।

परन्तु क्या हम यह जानते हैं कि जैन शब्द का मूल जो 'जिन' शब्द में निहित है, उस जिन शब्द का अर्थ क्या है?

जिन शब्द का अर्थ है 'जीतना'।

किसे जीतना?

अपने ही दुर्गुणों को, विकृतियों को, आन्तरिक मल को, अपने स्वभाव की दुर्बलताओं को जीतना।

लोक में भी कहावत है कि, 'जो जीता वही सिकंदर'। परन्तु हमारे धर्म में तो स्पष्ट रूप से कहा गया है कि, "राग द्वेष पर जिन्होंने विजय प्राप्त की वही जिन है।"

खुद के एक निश्चित स्वभाव में स्थिर है। आग हमेशा गर्म होती है, पानी को यदि गर्म किया जाए तब भी वह बहुत जल्दी शीतल हो जाता है, सूर्य कभी शीतल नहीं होता, चंद्र कभी गर्म हो नहीं सकता। लोहा कड़क हो जाता है, पानी द्रव स्वरूप में रहता है। हवा स्थिर नहीं रह पाती और पत्थर उड़ नहीं पाता।

इन सभी का अपना-अपना स्वभाव है, और इस स्वभाव के अनुसार ही सबकी अपनी-अपनी पहचान होती है। उस पहचान के आधार पर ही तो हम उनके



पास जाते हैं। ठंडी चाहिए तो पानी के पास जाते हैं, और गर्मी चाहिए तो आग के करीब जाते हैं।

परन्तु क्या हम हमारा स्वभाव जानते हैं?

हमारा मूल स्वभाव राग द्वेष से मुक्त, निरंजन, निराकार, निर्मल और निर्दोष ही है।

हम में कोई क्रोध नहीं, कोई द्वेष नहीं, कोई माया नहीं, कोई शोक नहीं। रोग, दुःख, पीड़ा आदि तो शरीर के गुण या अवगुण हैं। हमारी आत्मा तो दुःख और दर्द से सर्वथा मुक्त ही है। निरंतर आनंद में ही मग्न है।

परन्तु हमारे इस स्वभाव का न तो हमें ज्ञान है, न तो कोई अनुभव। पहले तो हम हमें जाने, बाद में हम जैसे भी हैं वैसा अनुभव में लायें।

और इसी कारण 'जिन' पद की उपासना करें। क्योंकि उनकी उपासना से हमारे लक्ष्य में निरंतर यह भाव बना रहता है कि हमें भी ऐसा ही बनना है।

भगवान की प्रतिमा जिन रूप में ही विराजित होती है। भगवान की मुद्रा को देखने मात्र से ही हमें

हमारे असली शुद्ध स्वरूप का अनायास बोध हो जाता है, और भगवान की पूजा करने के बहाने हम जिनरूप की, जो कि निजरूप ही है, उसी की उपासना करते हैं।

जिन को निज में समाना है, जिन को निज में ढूंढना है और पाना है। प्रभु के जैसा बनना है। न कोई आशा, न कोई पीड़ा, न कोई मोह, न कोई विकार...

शुद्ध स्वयं का असली स्वभाव!

वह स्वभाव जो प्रभु की प्रतिमा में दिखता है, जो साधु भगवंत की जीवनी में झलकता है, जो आस्थावान भक्त की आँखों में उभरता है, जो हमारा खुद ही का है, फिर भी हमीं से खो चुका है। खुद में खोये हुए खुद की खोज, यानी जिन पद की आराधना। चलिए इस पद की भक्ति करें:

॥ जिन पद ॥

(तुझ से जुदा होकर...)

मल से अलग होकर, मुझे शुद्ध होना है;
इस कारण 'जिन पद' का, मुझे ध्यान करना है...
जिनवरा! दोषों से मुझे छुड़वा, कर्मों से मुक्त करा...
मुझसे ना होना रुसवा...

मैं ज्ञानी मूरख हूँ, दुनिया को जान लिया; पर मैं खुद कौन हूँ, मैं ये ना जान सका;
जिन पद को जब जाना, मैंने मुझे पहचाना, अब ना कुछ है पाना, मुझ में ही समा जाना;
एक प्यास जागी है, विश्वास साथी है, जिसको जिन ने पाया, वह मुक्ति पानी है...॥1॥

धोखा किया मैंने, संसार में मुझसे; ना कोई मेरा दुश्मन, मैं खुद का शत्रु था;
जो दिखता था ना था, उसके पीछे दौड़ा, जो ना दिखता मेरा था, उसको छोड़ दिया;
जग से जुदा होकर, उस राह जाना है, जिसके लिए मानव जीवन ये पाया है... ॥2॥

संसार और मुक्ति, मेरे भीतर ही दिखती, अपने दुःखों का मैं एकमात्र कारण हूँ;
जिन राग द्वेष को, जिन आपने जीता, मैंने भी संजोया है, उस सत्व का सपना;
पर कुसंस्कारों की बड़ी भारी माया है, मेरी कसौटी का अब वक्त आया है... ॥3॥



Secret of Happiness

पूज्य मुनिराज श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

एक सप्ताह पहले ही शादी किया हुआ एक युवक एक ज्योतिषी के पास गया, और अपनी कुंडली बताकर पूछने लगा कि, “मेरा वैवाहिक जीवन कैसा रहेगा?”

कुंडली देखकर ज्योतिषी बोला, “शुरु के 3 वर्ष तकलीफ है।”

युवक ने फिर पूछा, “3 वर्ष के बाद तो कोई परेशानी नहीं होगी ना?”

ज्योतिषी ने कहा, “परेशानी तो होगी, पर फिर आपको आदत हो जायेगी।”

सभी जीव हेप्पीनेस और आनंद चाहते है। सभी को जिज्ञासा रहती है कि,

‘What are the secrets of happy life?’

करोड़ रुपयों का प्रश्न है कि, ‘ऐसी कौनसी चीज है, जो मुझे आनंदित बना सकती है।’

इस समस्या का समाधान देने से पहले मैं आपको एक दृष्टांत बताता हूँ। इसी से ही आपको इसका जवाब मिल जायेगा।

एक 65 वर्ष की महिला किसी बहुत बड़ी मल्टीनेशनल कंपनी की CEO की Post पर थी। कंपनी का सफलतापूर्वक संचालन

करके वह एक दिन Retire हो रही थी। कंपनी की ओर से उसके सम्मान में बहुत बड़ी पार्टी organise की गई थी।

पार्टी के दरमियान स्टेज पर बैठी हुई उस लेडी को एक व्यक्ति ने प्रश्न पूछा कि, ‘does your husband keeps you happy?’

‘क्या आपका पति आपको खुश रखता है?’

पार्टी में आये हुए सभी व्यक्तियों के कान और विशेषतः उसके पति के कान भी सावधान हो गये कि यह lady क्या response देती है?

पति को तो 100% confidence था कि वह ‘हाँ’ में ही जवाब देगी। क्योंकि उसने पूरी मैरेज लाइफ में कभी भी किसी भी चीज में कोई फरियाद या झगड़ा नहीं किया था।

पर उसके पति को तब शौक लगा जब उस lady ने सभी के बीच में कहा कि, ‘No, नहीं, मेरे पति ने मुझे कभी भी खुश नहीं रखा।’



पति के साथ पूरी सभा यह जवाब सुनकर दंग रह गई।

उस लेडी ने अपनी बात कहनी जारी राखी, “नहीं, मेरे पति ने मुझे हैप्पी किया ही नहीं है। और महत्व की बात यह है कि मुझे खुश रखना उनकी जिम्मेदारी है ही नहीं। मेरे सुख या दुःख, प्रसन्नता या पीड़ा, आनंद या अफसोस, इन सबकी जिम्मेदारी मेरी खुद की है। उसका बोझ मैंने अपने पति पर डाला ही नहीं।

मैंने ही तय किया था कि मुझे जिंदगी की किसी भी परिस्थिति या प्रसंग में प्रसन्न रहना है, और इसी कारण मैं प्रसन्न और सफल बन सकती हूँ। यदि मैं मेरी प्रसन्नता का आधार अन्य व्यक्ति या परिस्थिति पर रखूँगी, तो मैं दुःखी हुए बिना नहीं रहूँगी। क्योंकि सभी ही व्यक्ति मेरी अपेक्षा के हिसाब से व्यवहार नहीं करेंगे, और सभी परिस्थितियाँ भी मेरी धारणा अनुसार निर्मित हो, ऐसा जरूरी नहीं है। इस जिंदगी में सब कुछ निरंतर change होता रहता है। हमारे आस-पास के व्यक्ति बदल जाते हैं। हमारा खुदका social और economic स्टेटस बदल जाता है। फिजिकल और मेन्टल हेल्थ बदल जाती है, climate भी बदल जाता है, बॉस और क्लीग्स भी बदल जाते हैं। इस दुनिया में सब कुछ ही बदलता रहता है।”

पार्टी में आया हर एक व्यक्ति इस लेडी के हर एक वाक्य को ध्यान से सुन रहा था।

Lady ने आगे कहा, “मैंने तय किया है कि यदि

मुझे खुश रहना है, तो बाहर के एक भी व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति की अपेक्षा रखे बिना मुझे जो भी मिलेगा उसमें मैं प्रसन्न रहूँगी। मैं अमीर रहूँ या गरीब, मेरे बहुत सारे फ्रेंड्स हों या मैं अकेली रहूँ, मेरे पास बहुत कुछ साधन-सामग्री हो या कम, पर मैं प्रसन्न रहूँगी। आज मैं married हूँ। पर जब मैं single थी, तब भी मैं प्रसन्न और आनंदित थी। क्योंकि college life से ही मैंने तय कर लिया था कि, मुझे खुद अपने-आप को हमेशा खुश, प्रसन्न और आनंदित रखना है।

“यद्यपि मेरे पतिदेव मेरे लिए भगवान हैं। वे मुझे बहुत प्रेम करते हैं, उन्होंने मुझे खुश रखने के लिए अपनी केपेसिटी के हिसाब से सब कुछ किया है, कभी भी मेरे साथ झगड़ा नहीं किया। मेरी इच्छाओं को पूरी करने के सारे प्रयत्न किये हैं।

फिर भी ‘वो’ हैं तो मैं खुश हूँ, या दूसरे व्यक्ति और वस्तुओं के कारण मैं खुश हूँ, ऐसा equation, समीकरण मैंने मेरे जीवन में कभी बनाया ही नहीं है। मैंने मेरे पति को मुझे खुश रखने के बर्डन से हमेशा मुक्त ही रखा है।

मुझे खुद अपने आप को खुश रखना है। यही दृष्टिकोण जीवनयात्रा को comfort, lighter, easier और happiest बनाता है।”

इतना बोलते-बोलते lady की आँखें गीली हो गईं और उसने अपना वक्तव्य पूरा किया। पार्टी में आये हुए हर एक व्यक्ति ने तालियों की गूंज से हॉल को भर दिया।

यह पूरा प्रसंग एक सुंदर-सा मैसेज देकर जाता है कि, हम संकल्प करें:

- 1 मेरी जिंदगी की हर पल को मैं प्रसन्नता से हरा-भरा रखूँगा।
- 2 मेरी प्रसन्नता की जिम्मेदारी दूसरों की नहीं है, मेरी खुद की है।
- 3 मैं अपनी प्रसन्नता का रिमोट कंट्रोल किसी भी व्यक्ति या वस्तु को नहीं दूँगा।





LEARNING MAKES A MAN PERFECT

VISIT US

www.faithbook.in



FaithbookOnline

-
- "Faithbook" नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को "Faithbook" नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
 - प्रकाशित लेख एवं विचारों से "Faithbook" के चयनकर्ता, प्रकाशक, निदेशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
 - इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।